आधुनिक भारत

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Web: www.drishtiias.com
E-mail : drishtiacademy@gmail.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिए निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

भारत में यूरोपीय कंपनियों का आगमन
(Arrival of European Companies in India)

पुर्तगालियों का भारत आगमन *(Arrival of Portuguese in India)*

भारतीय इतिहास में व्यापार-वाणिज्य की शुरुआत हड़प्पा काल से मानी जाती है। भारत की प्राचीन सांस्कृतिक विरासत, आर्थिक सम्पन्नता, आध्यात्मिक उपलब्धियाँ, दर्शन, कला आदि से प्रभावित होकर मध्यकाल में बहुत से व्यापारियों एवं यात्रियों का यहाँ आगमन हुआ। किंतु, 15वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं 17वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के मध्य भारत में व्यापार के प्रारंभिक उद्देश्यों से प्रवेश करने वाली यूरोपीय कम्पनियों ने यहाँ की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक नियति को लगभग 350 वर्षों तक प्रभावित किया। इन विदेशी शक्तियों में पुर्तगाली प्रथम थे। इनके पश्चात् डच, अंग्रेज़, डेनिश तथा फ्राँसीसी आए। डचों के अंग्रेज़ों से पहले भारत आने के बावजूद ब्रिटिश 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' की स्थापना डच 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' से पहले हुई।

यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कंपनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। भारत के लिये नए समुद्री मार्ग की खोज पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई, 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन (यह कालीकट के शासक की उपाधि थी) द्वारा किया गया। तत्कालीन भारतीय व्यापार पर अधिकार रखने वाले अरब व्यापारियों को जमोरिन का यह व्यवहार पसंद नहीं आया, अत: उनके द्वारा पुर्तगालियों का विरोध किया गया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। भारत आने और जाने में हुए यात्रा-व्यय के बदले में वास्कोडिगामा ने करीब 60 गुना अधिक धन कमाया। इसके बाद धीरे-धीरे पुर्तगालियों ने भारत आना आरंभ कर दिया। भारत में कालीकट, गोवा, दमन, दीव एवं हुगली के बंदरगाहों में पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की। भारत में द्वितीय पुर्तगाली अभियान पेड्रो अल्वरेज़ कैब्राल के नेतृत्व में सन् 1500 ई. में छेड़ा गया। कैब्राल ने कालीकट बंदरगाह में एक अरबी जहाज को पकड़कर जमोरिन को उपहारस्वरूप भेंट किया। 1502 ई. में वास्कोडिगामा का पुन: भारत आगमन हुआ। भारत में प्रथम पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना 1503 ई. में कोचीन में की गई तथा द्वितीय फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

पुर्तगाल से प्रथम वायसराय के रूप में फ्राँसिस्को द अल्मेडा का भारत आगमन सन् 1505 ई. में हुआ। यह 1509 ई. तक भारत में रहा। उसे पुर्तगाली सरकार की ओर से यह निर्देश दिया गया था कि वह भारत में ऐसे दुर्गों का निर्माण करे जिनका उद्देश्य सिर्फ सुरक्षा न होकर हिंद महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो। उसके द्वारा अपनाई गई यह नीति 'नीले या शांत जल की नीति' कहलाई। 1508 ई. में अल्मेडा संयुक्त मुस्लिम नौसैनिक बेड़े (मिश्र + तुर्की + गुजरात) के साथ चौल के युद्ध (War of Chaul, 1508) में पराजित हुआ। अगले वर्ष अर्थात् 1509 ई. में अल्मेडा ने इसी संयुक्त मुस्लिम बेड़े को पराजित किया। इसने हिन्द महासागर में पुर्तगालियों की स्थिति को मजबूत करने के लिये सामुद्रिक नीति को अधिक महत्व दिया।

सन् 1509 ई. में भारत में अगले पुर्तगाली वायसराय के रूप में अल्फांसो द अल्बुकर्क का आगमन हुआ। इसे भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने कोचीन को अपना मुख्यालय बनाया। अल्बुकर्क ने 1510 ई. में गोवा को बीजापुर के शासक युसुफ आदिलशाह से छीनकर अपने अधिकार क्षेत्र में कर लिया। इसने 1511 ई. में दक्षिण-पूर्व एशिया की महत्वपूर्ण मंडी मलक्का तथा 1515 ई. में फारस की खाड़ी में अवस्थित होरमुज पर अधिकार कर लिया। अल्बुकर्क ने पुर्तगाली पुरुषों को पुर्तगालियों की आबादी बढ़ाने के उद्देश्य से भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिये प्रोत्साहित किया तथा पुर्तगाली सत्ता एवं संस्कृति के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में गोवा को स्थापित किया। यह वह समय था जब पुर्तगालियों ने प्रत्यक्ष रूप से भारतीय राजनीति में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर दिया था।

नीनो-डी-कुन्हा अगला प्रमुख पुर्तगाली गवर्नर था। इसका प्रमुख कार्य गोवा को पुर्तगालियों की औपचारिक राजधानी (1530 ई.) के रूप में परिवर्तित करना था। 1530 ई. में कुन्हा ने सरकारी कार्यालय कोचीन से गोवा स्थानान्तरित कर दिया। कुन्हा ने हुगली (बंगाल) और सेन्थोमा (मद्रास के निकट) में पुर्तगाली बस्तियों को स्थापित किया एवं 1534 ई. में बेसीन तथा 1535 ई. में दीव पर अधिकार कर लिया। बेसीन के प्रश्न पर उसने गुजरात के शासक बहादुरशाह से युद्ध किया। इसमें बहादुरशाह की पराजय हुई तथा समुद्र में डूब जाने से उसकी मृत्यु हो गई।

पश्चिम भारत के बंबई, चौल, दीव, सालसेट एवं बेसीन नामक क्षेत्र पर पुर्तगाली वायसराय जोवा-डी-कैस्ट्रो द्वारा नियंत्रण स्थापित किया गया। भारत में प्रथम पादरी फ्रांसिस्को जेवियर का आगमन अन्य पुर्तगाली गवर्नर अल्फांसो डिसूजा (1542–1545 ई.) के समय हुआ।

पुर्तगाली एशियाई देशों से व्यापार के लिये भारत में अवस्थित नागपट्टनम बंदरगाह का प्रयोग करते थे। वे कोरोमण्डल तट के मसुलीपट्टनम और पुलिकट शहरों से वस्त्रों को एकत्रित कर उनका निर्यात करते थे। पुर्तगाली चटगाँव (बंगाल) के बंदरगाह को 'महान बंदरगाह' की संज्ञा देते थे।

पुर्तगालियों ने हिन्द महासागर से होने वाले आयात-निर्यात पर एकाधिकार स्थापित कर लिया था। उन्होंने यहाँ कॉर्ट्ज-आर्मेडा काफिला पद्धति (Cortes-Armada Caravan System) का प्रयोग किया जिसके अंतर्गत हिन्द महासागर का प्रयोग करने वाले प्रत्येक जहाज को शुल्क अदा करना होता था। पुर्तगालियों ने बिना परमिट (या कॉर्ट्ज) के भारतीय एवं अरबी जहाजों को अरब सागर में प्रवेश करने से वर्जित कर दिया। पुर्तगालियों ने शुल्क लेकर छोटे स्थानीय व्यापारियों के जहाजों को संरक्षण प्रदान किया। जिन जहाजों को परमिट प्राप्त होता था उन्हें गोला बारूद और काली मिर्च का व्यापार करने की अनुमति नहीं थी। मुगल सम्राट अकबर को भी पुर्तगालियों से कॉर्ट्ज (परमिट) लेना पड़ा। मुगल शासक अकबर के दरबार में दो पुर्तगाली ईसाई पादरियों मॉन्सरेट तथा फादर एकाबिवा का आगमन हुआ। शाहजहाँ ने 1632 ई. में हुगली को पुर्तगालियों के अधिकार क्षेत्र से छीन लिया। तत्पश्चात् औरंगजेब ने सन् 1686 ई. में चटगाँव से समुद्री लुटेरों का सफाया कर दिया।

भारत में तंबाकू की खेती, जहाज निर्माण (कालीकट एवं गुजरात) तथा प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत पुर्तगालियों के आगमन के पश्चात् हुई। पुर्तगालियों ने ही सन् 1556 ई. में गोवा में प्रथम प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना की। भारत में गोथिक स्थापत्य कला (Gothic Architecture) पुर्तगालियों की ही देन है।

18वीं सदी की शुरुआत तक भारतीय व्यापार के क्षेत्र में पुर्तगालियों का प्रभाव कम हो गया था। यद्यपि पुर्तगालियों ने भारत में सर्वप्रथम प्रवेश किया, किंतु उनकी धार्मिक असहिष्णुता की नीति, बर्बरतापूर्ण समुद्री लूटपाट की नीति, अल्बुकर्क के अयोग्य उत्तराधिकारी, अंग्रेज़ी तथा डच शक्तियों का विरोध, विजयनगर साम्राज्य का पतन तथा स्पेन द्वारा पुर्तगाल की स्वतन्त्रता का हरण इत्यादि अनेक कारणों से भारतीय व्यापार के क्षेत्र से उनका पतन हो गया।

भारत में डचों का आगमन *(Arrival of the Dutch in India)*

पुर्तगालियों के पश्चात् डच भारत आये। ये नीदरलैण्ड या हॉलैण्ड के निवासी थे। डचों की नीयत दक्षिण-पूर्व एशिया के मसाला बाज़ारों में सीधा प्रवेश कर नियंत्रण स्थापित करने की थी। 1596 ई. में कारनेलिस डि हाउटमैन (Cornelis de Houtman) भारत आने वाला प्रथम डच नागरिक था। डचों ने सन् 1602 ई. में एक विशाल व्यापारिक कम्पनी की स्थापना 'यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कंपनी ऑफ नीदरलैण्ड' के नाम से की। इसका गठन विभिन्न व्यापारिक कम्पनियों को मिलाकर किया गया था। इसका वास्तविक नाम 'वेरिंगदे ओस्टइण्डिशे कंपनी' (Verenigde Oostindische Compagnie–VOC) था।

डचों ने पुर्तगालियों से संघर्ष कर उनकी शक्ति को क्षीण कर दिया तथा भारत के सभी महत्वपूर्ण मसाला उत्पादन के क्षेत्रों पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। डचों ने गुजरात, बंगाल,

विदेशी कंपनियाँ

कंपनी		स्थापना वर्ष
• एस्तादो द इंडिया	:	1498
• (पुर्तगाली कंपनी)		
• वेरिंगिदे ओस्त इण्डिशे कंपनी	:	1602
• (डच ईस्ट इंडिया कंपनी)		
• ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी	:	1600 (1599)
• डेन ईस्ट इंडिया कंपनी	:	1616
• कम्पने देस इण्देस ओरियंतलेस	:	1664
• (फ्राँसीसी कंपनी)		

बिहार एवं उड़ीसा में अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की। भारत में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना मसुलीपट्टनम् में सन् 1605 ई. में हुई। इसके अतिरिक्त डचों द्वारा स्थापित अन्य महत्वपूर्ण फैक्ट्रियाँ पुलिकट (1610), सूरत (1616), चिन्सुरा, विमलीपट्टनम्, कासिम बाजार, पटना, बालासोर, नागपट्टनम तथा कोचीन में अवस्थित थीं। बंगाल में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना पीपली में सन् 1627 ई. में की गई। भारत से डच व्यापारियों ने मुख्यतः मसालों, नील, कच्चे रेशम, शीशा, चावल व अफीम का व्यापार किया। डचों द्वारा मसालों के निर्यात के स्थान पर कपड़ों को प्राथमिकता दी गई। ये कपड़े कोरोमंडल तट (बंगाल) एवं गुजरात से निर्यात किये जाते थे। भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केन्द्र बनाने का श्रेय डचों को जाता है।

1759 ई. में 'बेदरा के युद्ध' (बंगाल) में अंग्रेज़ों द्वारा हुई पराजय के उपरांत भारत में अंतिम रूप से डचों का पतन हो गया। 'बेदरा के युद्ध' में अंग्रेज़ी सेना का नेतृत्व क्लाइव द्वारा किया गया। अंग्रेज़ों की तुलना में नौ-सैनिक शक्ति का कमज़ोर होना, अत्यधिक केन्द्रीकरण की नीति, बिगड़ती हुई आर्थिक स्थिति, मसालों के द्वीपों पर अत्यधिक ध्यान देना आदि को डचों के पतन के कारणों में गिना जाता है। डचों की व्यापारिक व्यवस्था का उल्लेख 1722 ई. के दस्तावेज़ों में मिलता है। यह कार्टेल (Cartel) अर्थात् सहकारिता पर आधारित व्यवस्था थी।

डच कम्पनी ने लगभग 200 वर्षों तक अपने साझेदारों को जितना लाभांश दिया (18%), वह वाणिज्य के इतिहास में एक रिकॉर्ड माना जाता है।

अंग्रेज़ों का भारत आगमन *(Arrival of the British in India)*

1599 ई. में कुछ अंग्रेज़ व्यापारियों द्वारा पूर्वी देशों से व्यापार करने के उद्देश्य से 'गवर्नर ऑफ कंपनी एण्ड मर्चेन्ट ऑफ लंदन ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडीज़' (Governor of Company of Merchants of London Trading to the East Indies) नामक कंपनी की स्थापना की गई। इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने 31 दिसम्बर, 1600 ई. को एक रॉयल चार्टर जारी कर इस कंपनी को 15 वर्ष के लिये पूर्वी देशों से व्यापार करने का एकाधिकार पत्र दे दिया। उस समय ईस्ट इंडिया कम्पनी (East India Company) में कुल 217 साझीदार थे। ईस्ट इंडिया कम्पनी में इसकी प्रतिद्वन्द्वी कम्पनी 'न्यू कंपनी' का सन् 1708 ई. में विलय हो गया जिसके फलस्वरूप 'द यूनाइटेड कम्पनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ इंग्लैंड ट्रेडिंग टू द ईस्ट इंडीज' (The United Company of Merchants of England Trading to the East Indies) की स्थापना हुई।

यूरोपीय व्यापारिक कंपनी से संबद्ध व्यक्ति

- वास्कोडिगामा : भारत आने वाला प्रथम यूरोपीय यात्री।
- पेड्रो अल्वरेज कैब्राल : भारत आने वाला द्वितीय पुर्तगाली।
- फ्रांसिस्को डि अल्मेडा : भारत का प्रथम पुर्तगाली गवर्नर।
- जॉन मिल्डेनहाल : भारत आने वाला प्रथम ब्रिटिश नागरिक।
- कैप्टन हॉकिन्स : प्रथम अंग्रेज़ दूत जिसने सम्राट जहाँगीर से भेंट की।
- जैरॉल्ड ऑन्गियार : बम्बई का संस्थापक।
- जॉब चॉरनाक : कलकत्ता का संस्थापक।
- चार्ल्स आयर : फोर्ट विलियम (कलकत्ता) का प्रथम प्रशासक।
- विलियम नॉरिस : 1638 में स्थापित नई ब्रिटिश कंपनी 'ट्रेडिंग इन द ईस्ट' का दूत जो व्यापारिक विशेषाधिकार हेतु औरंगजेब के दरबार में उपस्थित हुआ।
- फ्रैंकोइस मार्टिन : पाण्डिचेरी का प्रथम फ्राँसीसी गवर्नर।
- फ्रांसिस डे : मद्रास का संस्थापक।
- शोभा सिंह : बर्धमान का जमींदार, जिसने 1690 में अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोह किया।
- इब्राहिम खाँ : कालीकाता, गोबिन्दपुर तथा सुतानती का जमींदार।
- जॉन सुरमन : मुगल सम्राट फर्रुखसियर से विशेष व्यापारिक सुविधा प्राप्त करने वाले शिष्टमंडल का मुखिया।
- फादर मॉन्सरेट : अकबर के दरबार में पहुँचने वाले प्रथम शिष्टमंडल का अध्यक्ष।
- कैरोन फ्रैंक : इसने भारत में प्रथम फ्राँसीसी फैक्ट्री की सूरत में स्थापना की।

1608 ई. में ब्रिटेन के सम्राट जेम्स प्रथम ने भारत में व्यापारिक कोठियों को खोलने के उद्देश्य से कैप्टन हॉकिन्स को अपने राजदूत के रूप में मुगल सम्राट जहाँगीर के दरबार में भेजा। हॉकिन्स ने मुगल सम्राट जहाँगीर से फारसी में बात की। वह तुर्की एवं फारसी भाषाओं का अच्छा ज्ञाता था। हॉकिन्स वह प्रथम अंग्रेज़ था जिसने भारत की भूमि में प्रवेश समुद्र के रास्ते किया था। हॉकिन्स ने सन् 1609 ई. में मुगल बादशाह जहाँगीर से अजमेर में मिलकर सूरत में बसने की आज्ञा मांगी। सूरत के स्थानीय व्यापारियों एवं पुर्तगालियों द्वारा इसका विरोध किया गया। परिणामस्वरूप उसे स्वीकृति नहीं मिली। 1611 ई. में मुगल बादशाह जहाँगीर अंग्रेज़ कैप्टन मिडल्टन के द्वारा स्वाल्ली में पुर्तगालियों के जहाजी बेड़े को पराजित किये जाने से अत्यधिक प्रभावित हुआ। जहाँगीर ने 1613 ई. में सूरत में अंग्रेज़ों को स्थाई कारखाना स्थापित करने की अनुमति प्रदान की। जहाँगीर के दरबार में सन् 1615 ई. में सम्राट जेम्स प्रथम का दूत सर टॉमस रो पहुँचा जिसने मुगल साम्राज्य के सभी भागों में व्यापार करने एवं फैक्ट्रियाँ स्थापित करने का अधिकार पत्र (शाही फरमान) प्राप्त कर लिया। परिणामस्वरूप, अंग्रेज़ों ने आगरा, अहमदाबाद तथा भरुच में अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना की।

सन् 1611 ई. में अंग्रेज़ों द्वारा व्यापारिक कोठी की स्थापना मसुलीपट्टनम में की गई। तत्पश्चात् 1639 ई. में मद्रास तथा 1651 ई. में हुगली में व्यापारिक कोठियाँ खोली गई। पूर्वी भारत में अंग्रेज़ों द्वारा स्थापित प्रथम कारखाना 1633 ई. में उड़ीसा के बालासोर में खोला गया। इसके पश्चात् अंग्रेज़ों ने बंगाल तथा बिहार में भी अपने कारखाने खोले। 1661 ई. में इंग्लैण्ड के सम्राट चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से हुआ। इस विवाह में बंबई को दहेज के रूप में चार्ल्स को भेंट कर दिया गया, जिसे उन्होंने दस पाउंड के वार्षिक किराये पर कंपनी को दे दिया। अंग्रेज़ों ने 1639 ई. में मद्रास में ज़मीन को पट्टे पर लेकर कारखाने की स्थापना की, इसके साथ ही कारखाने की किलेबंदी भी की गई। इसे 'फोर्ट सेंट जॉर्ज' का नाम दिया गया।

अंग्रेज़ों ने धीरे-धीरे मुगल राजनीति में हस्तक्षेप करना आरंभ कर दिया। 1686 ई. में अंग्रेज़ों ने हुगली को लूट लिया, परिणामस्वरूप उनका मुगल सेनाओं से संघर्ष हुआ। इस युद्ध के बाद कंपनी को सूरत, मसुलीपट्टनम तथा विशाखापट्टनम इत्यादि कारखानों से अपने अधिकार खोने पड़े। किंतु, अंग्रेज़ों द्वारा माफी मांगने के पश्चात् औरंगजेब ने डेढ़ लाख रुपये का हर्जाना लेकर उन्हें पुनः व्यापार करने का अधिकार प्रदान कर दिया। 1691 ई. में जारी एक शाही फरमान के द्वारा 3000 रुपये के निश्चित वार्षिक कर के बदले बंगाल में कंपनी को सीमा-शुल्क से छूट दे दी गई। कंपनी ने 1698 ई. में 12000 रुपये का भुगतान कर तीन गाँवों— सुतानती, कालीकाता एवं गोविन्दपुर की जमींदारी प्राप्त कर ली तथा फोर्ट विलियम नामक किले का निर्माण किया। कालांतर में जॉब चॉरनाक के प्रयासों से इसी स्थान पर कलकत्ता नगर की नींव पड़ी।

1717 ई. में मुगल सम्राट फर्रुखसियर का सफल इलाज कंपनी के एक डॉक्टर विलियम हेमिल्टन द्वारा किये जाने से फर्रुखसियर ने कंपनी को व्यापारिक सुविधाओं वाला एक फरमान जारी किया। इस फरमान के अंतर्गत कंपनी को बंगाल में 3000 रुपये वार्षिक के बदले व्यापार करने, आसपास की भूमि किराए पर लेने, सूरत में 10000 रुपये वार्षिक के बदले निःशुल्क व्यापार करने तथा बंबई की टकसाल से जारी सिक्कों को मुगल साम्राज्य में मान्यता दिलाने संबंधी अधिकार प्राप्त हो गए। इतिहासकार ओर्म्स ने इस फरमान को कंपनी का 'महाधिकार पत्र' (मैग्नाकार्टा) कहा है।

भारत में फ्राँसीसियों का आगमन *(Arrival of the French in India)*

फ्राँसीसियों ने भारत में अन्य यूरोपीय कम्पनियों की तुलना में सबसे बाद में प्रवेश किया। भारत में पुर्तगाली, डच, अंग्रेज़ तथा डेन लोगों ने इनसे पहले अपनी व्यापारिक कोठियों की स्थापना कर दी थी। सन् 1664 ई. में फ्राँस के सम्राट लुई 14वें के समय उनके मंत्री कोल्बर्ट के प्रयासों से फ्राँसीसी व्यापारिक कंपनी 'कंपनी द इण्ड ओरिएण्टल' (कम्पनी देस इण्डस ओरियंटोल्स) की स्थापना हुई। इस कम्पनी का निर्माण फ्राँस की सरकार द्वारा किया गया था, तथा इसका सारा खर्च भी सरकार ही वहन करती थी। इसे सरकारी व्यापारिक कम्पनी भी कहा जाता था क्योंकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी व सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी।

सूरत में 1668 ई. में फ्राँसीसियों की प्रथम कोठी की स्थापना फ्रैंक कैरो द्वारा की गई। फ्राँसीसियों द्वारा दूसरी व्यापारिक कोठी की स्थापना गोलकुंडा रियासत के सुलतान से अधिकार-पत्र प्राप्त करने के पश्चात् सन् 1669 ई. में मसुलीपट्टनम में की गई। 'पांडिचेरी' की नींव फ्रेंडोइस मार्टिन द्वारा सन् 1673 ई. में डाली गई। बंगाल के नवाब शाइस्ता खाँ ने फ्राँसीसियों को एक जगह किराये पर दी जहाँ चंद्रनगर की सुप्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गई। डचों ने 1693 ई. में पांडिचेरी को

फ्राँसीसियों के नियंत्रण से छीन लिया, किंतु 1697 ई. के रिजविक समझौते के अनुसार उसे वापस कर दिया। फ्राँसीसियों द्वारा 1721 ई. में मॉरिशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराइकल पर अधिकार कर लिया गया। 1742 ई. के पश्चात् व्यापारिक लाभ कमाने के साथ-साथ फ्राँसीसियों की राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ भी जागृत हो गई। परिणामस्वरूप अंग्रेज़ों और फ्राँसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को 'कर्नाटक युद्ध' के नाम से जाना जाता है।

भारत में उस समय कर्नाटक का यह क्षेत्र कोरोमण्डल तट पर अवस्थित था। लगभग 20 वर्षों तक दोनों कम्पनियों के मध्य संघर्ष चला जिसका विवरण निम्नवत् है-

अंग्रेज़ तथा फ्राँसीसी व्यापारिक कंपनियों के मध्य संघर्ष
(Wars between the British and the French Trade Companies)

प्रथम कर्नाटक युद्ध, 1746–1748 (First Carnatic War, 1746–1748): इस युद्ध की पृष्ठभूमि में यूरोप में दोनों शक्तियों के मध्य लड़ा गया ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध था। 1746 ई. में भारत में हुआ यह युद्ध मात्र उसका विस्तार था। यूरोप में फ्राँस और ब्रिटेन एक-दूसरे के विरोधी थे जिसका प्रभाव भारत में भी पड़ा। फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले युद्ध के पक्ष में नहीं था। उसके द्वारा अंग्रेज़ अधिकारियों से बात करने के बाद भी कोई समाधान नहीं निकल पाया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध प्रारंभ होने का तात्कालिक कारण एक अंग्रेज़ अधिकारी कैप्टन बर्नेट द्वारा कुछ फ्राँसीसी जहाजों पर कब्जा कर लेना था। डूप्ले ने मॉरिशस के फ्राँसीसी गवर्नर ला बूर्दने की सहायता से मद्रास को घेर लिया। यद्यपि अंग्रेज़ी गवर्नर मोर्श ने 21 सितम्बर, 1746 ई. को आत्मसमर्पण कर दिया किन्तु डूप्ले का रणनीतिक लक्ष्य 'फोर्ट सैन डेविस' को जीतना था। लेकिन वह इसे जीत पाने में असफल रहा। भारत में फ्राँसीसियों के समक्ष अंग्रेज़ इस समय बिल्कुल असहाय थे। इसी समय **'सेन्ट टोमे'** नामक एक और युद्ध फ्राँसीसी सेना और कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के बीच लड़ा गया। इस युद्ध में फ्राँसीसी विजयी रहे।

महत्वपूर्ण तिथियाँ: एक दृष्टि में

1498	:	वास्कोडिगामा का भारत आगमन।
1500	:	द्वितीय पुर्तगाली यात्री कैब्राल का भारत आगमन।
1502	:	दूसरी बार वास्कोडिगामा का भारत आगमन।
1510	:	गोवा पर पुर्तगालियों का अधिकार।
1530	:	कोचीन की जगह गोवा पुर्तगालियों की राजधानी बनी।
1599	:	ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
1602	:	डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
1661	:	पुर्तगालियों ने ब्रिटेन के राजा को बम्बई दहेज में दिया।
1664	:	फ्राँसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना।
1690	:	जॉब चॉरनाक द्वारा कलकत्ता की स्थापना।
1708–09	:	ब्रिटेन की दो प्रतिद्वंद्वी कंपनियों का आपस में विलय।
1759	:	बेदरा का निर्णायक युद्ध जिसमें अंग्रेज़ों ने डचों को पराजित कर भारतीय व्यापार से बाहर कर दिया।
1760	:	वांडिवाश का निर्णायक युद्ध जिसमें अंग्रेज़ों ने फ्राँसीसियों को पराजित कर भारतीय व्यापार से बाहर किया।

प्रथम कर्नाटक युद्ध का अंत 1748 ई. में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हुई 'ऑक्सा-ला-शैपेल' की संधि से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार मद्रास अंग्रेज़ों को वापस कर दिया गया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध, 1749–1754 (Second Carnatic War, 1749–1754): कर्नाटक का द्वितीय युद्ध हैदराबाद तथा कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों के कारण हुआ। डूप्ले की राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ कर्नाटक के प्रथम युद्ध की सफलता के पश्चात् बढ़ने लगी थीं। भारत में ब्रिटेन और फ्राँस की कंपनियों ने एक-दूसरे के विरोधी गुटों को अपना समर्थन देकर आग में घी डालने का काम किया। डूप्ले ने नवाब पद के लिये चन्दा साहब को समर्थन दिया तथा दक्कन की सूबेदारी के लिये मुज़फ्फरजंग का समर्थन किया। अंग्रेज़ों ने इनके प्रतिद्वन्द्वियों अनवरुद्दीन एवं नासिरजंग को अपना समर्थन दिया। 1749 ई. में अंबूर में चंदा साहब ने अनवरुद्दीन को पराजित कर मार डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। वहीं दूसरी ओर दक्कन की सूबेदारी हेतु लड़े गए युद्ध में मुज़फ्फरजंग अपने भाई नासिरजंग से पराजित हो गया। मुज़फ्फरजंग अपने भाई नासिरजंग की मृत्यु के पश्चात् 1750 ई. में दक्कन का सूबेदार बन गया। 1751 ई. में इसी युद्ध के दौरान क्लाइव द्वारा अर्काट का घेरा डाला गया जो क्लाइव की प्रथम कूटनीतिक विजय मानी जाती है।

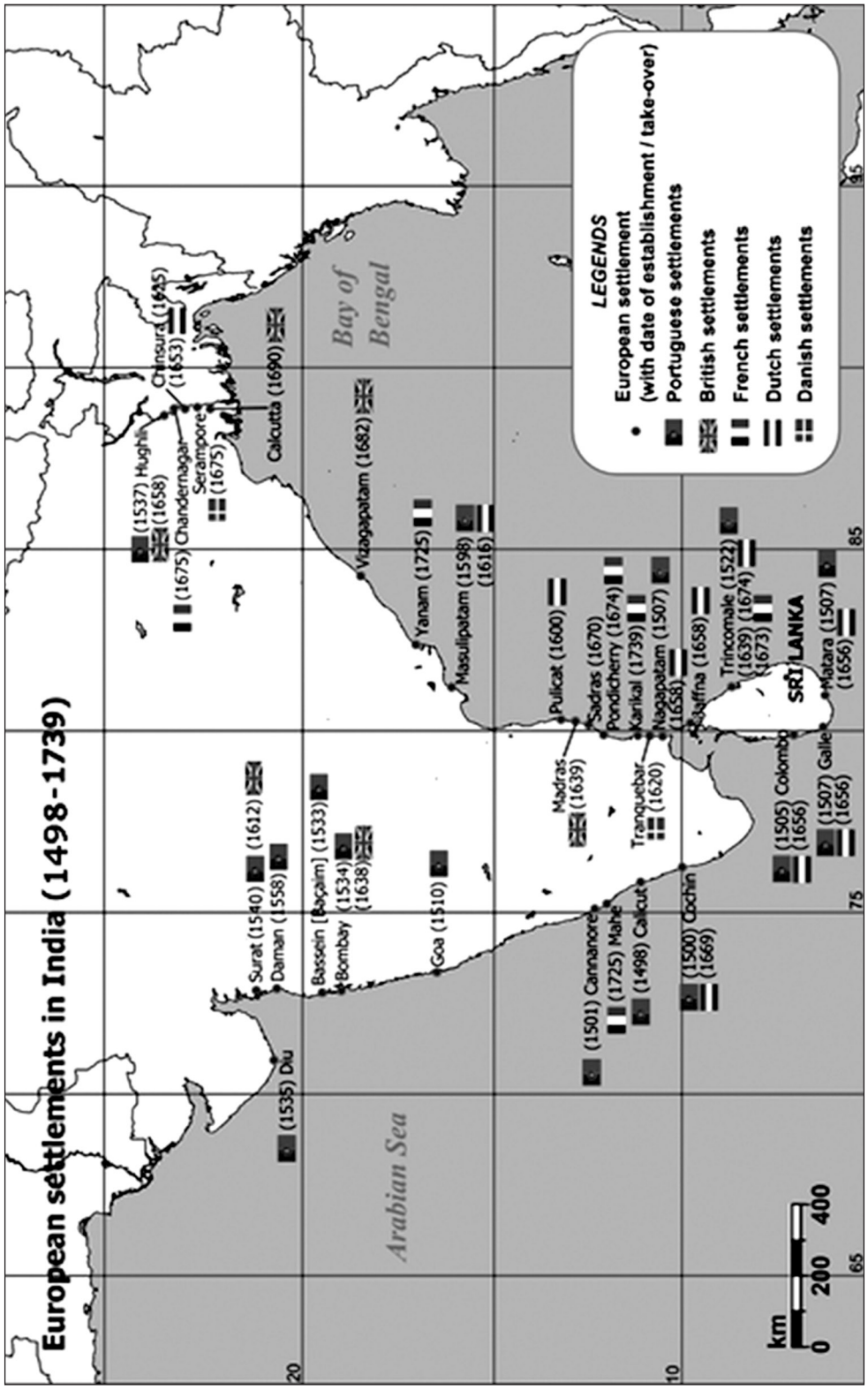

European settlements in India (1498-1739)
Arabian Sea
Bay of Bengal
(1535) Diu
Surat (1540) (1612)
Daman (1558)
Bassein [Baçaim] (1533)
Bombay (1534) (1638)
Goa (1510)
(1501) Cannanore
(1725) Mahe
(1498) Calicut
(1500) Cochin (1669)
Madras (1639)
Tranquebar (1620)
Pulicat (1600)
Sadras (1670)
Pondicherry (1674)
Karikal (1739)
Nagapatam (1507) (1658)
Jaffna (1658)
Trincomale (1522) (1639) (1674) (1673)
SRI LANKA
(1505) Colombo (1656)
(1507) Galle (1656)
Matara (1507) (1656)
Masulipatam (1598) (1616)
Yanam (1725)
Vizagapatam (1682)
Calcutta (1690)
(1537) Hughli (1658)
(1675) Chandernagar
Serampore (1675)
Chinsura (1625) (1653)
LEGENDS
European settlement (with date of establishment / take-over)
Portuguese settlements
British settlements
French settlements
Dutch settlements
Danish settlements
km 0 200 400
65
75
85
95
20
10

इस युद्ध का विस्तार से विवेचन न करते हुए यह कहना ही पर्याप्त होगा कि इस युद्ध में फ्राँस तथा फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले को अपूरणीय क्षति हुई। फ्राँसीसी सरकार ने डूप्ले को वापस बुला लिया तथा गोडेहू को अगला गवर्नर बनाकर भेजा। गोडेहू के प्रयासों से अंग्रेज़ी कंपनी के साथ जनवरी 1754 ई. में 'पांडिचेरी की संधि' हुई जिसके तहत दोनों पक्ष युद्ध विराम पर सहमत हुए। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि यह युद्ध अंग्रेज़ों के पक्ष में रहा।

तृतीय कर्नाटक युद्ध, 1758–1763 (Third Carnatic War, 1758-1763): यह युद्ध 1756 ई. में यूरोप के ऑस्ट्रिया और प्रशा में शुरू हुए सप्तवर्षीय युद्ध का ही विस्तार था। फ्राँस ने ऑस्ट्रिया तथा इंग्लैण्ड ने प्रशा को समर्थन देना आरंभ कर दिया, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव भारत में उपस्थित दोनों शक्तियों के सम्बन्धों पर पड़ा। इस युद्ध का तात्कालिक कारण फ्राँस की सरकार द्वारा काउंट डि लाली को भारत के संपूर्ण फ्राँसीसी क्षेत्र के सैनिक एवं असैनिक अधिकारों को प्रदान किया जाना था। दूसरी ओर, अंग्रेज़ों द्वारा बंगाल पर नियंत्रण स्थापित कर लेने के फलस्वरूप उनकी आर्थिक स्थिति बहुत मज़बूत हो गई थी, जिसके बल पर उन्होंने दक्कन को जीत लिया।

1758 ई. में लाली ने फोर्ट सेन्ट डेविड पर नियंत्रण स्थापित कर लिया किंतु तंजौर पर अधिकार करने का उसका सपना पूरा नहीं हो पाया। इससे फ्राँस एवं लाली की व्यक्तिगत छवि पर बुरा असर पड़ा। लाली ने युद्ध में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिये बुस्सी को हैदराबाद से वापस बुला लिया। यह एक बहुत बड़ी भूल साबित हुई। 1760 ई. में अंग्रेज़ों ने सर आयर कूट के नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों को हरा दिया। अंग्रेज़ों ने बुस्सी को कैद कर लिया तथा 1761 ई. में पांडिचेरी पर अपना नियंत्रण स्थापित करने के बाद माही एवं जिन्जी पर भी उन्होंने कब्जा कर लिया। तृतीय कर्नाटक युद्ध का अंत सन् 1763 ई. में 'पेरिस की संधि' से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार अंग्रेज़ों ने चंद्रनगर के अतिरिक्त अन्य सभी फ्राँसीसी प्रदेश, जो उस समय उनके नियंत्रण में थे, फ्रांस को वापस कर दिये।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. फ्राँसिस्को द अल्मेडा निम्नलिखित में किस यूरोपीय कंपनी के प्रथम वायसराय के रूप में भारत आया था?
   (a) फ्राँसीसी (b) डच
   (c) पुर्तगाली (d) ब्रिटिश
2. भारत में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है:
   (a) अल्बुकर्क को
   (b) नीनो-डी-कुन्हा को
   (c) फ्राँसिस्को द अल्मेडा को
   (d) फ्राँसिस्को जेवियर को
3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. कैप्टन हॉकिन्स ब्रिटेन के राजदूत के रूप में मुगल सम्राट शाहजहाँ के दरबार में भारत आया था।
   2. अंग्रेज़ों ने दक्षिण भारत में अपनी पहली व्यापारिक कोठी मसुलीपट्टनम में स्थापित की थी।
   3. फोर्ट सेंट जॉर्ज का निर्माण पांडिचेरी में किया गया था।

   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3
4. निम्नलिखित में से किस मुगल शासक ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को व्यापारिक सुविधाओं वाला एक फरमान जारी किया था?
   (a) औरंगजेब (b) शाहजहाँ
   (c) फर्रुखशियर (d) बहादुरशाह प्रथम
5. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?
   (a) डच कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित थी और यह सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर थी।
   (b) पुर्तगालियों ने आयात-निर्यात पर नियंत्रण स्थापित करने के लिये कार्ट्ज पद्धति का प्रयोग किया था।
   (c) भारत में गोथिक स्थापत्य कला अंग्रेज़ों की देन है।
   (d) उपरोक्त सभी।

6. भारत में यूरोपीय कंपनियों के आगमन का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
   (a) औपनिवेशिक विस्तार करना।
   (b) पूरब की संस्कृति से परिचित होना।
   (c) व्यापार करना।
   (d) भारत के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करना।
7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. अल्बुकर्क ने पुर्तगाली पुरुषों को भारतीय स्त्रियों से विवाह करने के लिये प्रोत्साहित किया था।
   2. बेदरा के युद्ध में अंग्रेज़ों ने डचों को पराजित किया था।

   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1 और न ही 2
8. भारत को भारतीय वस्त्रों के निर्यात का केन्द्र बनाने का श्रेय किस यूरोपीय कंपनी को दिया जाता है?
   (a) ब्रिटिश (b) डच
   (c) पुर्तगाली (d) फ्राँसीसी
9. भारत में पुर्तगालियों के व्यापार क्षेत्र में पतन के निम्नलिखित में से कौन-से कारक थे?
   1. अंग्रेज़ी तथा डच शक्तियों का विरोध
   2. धार्मिक असहिष्णुता की नीति
   3. समुद्री लूटपाट की नीति

   कूट:
   (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
10. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिये:

सूची-I	सूची-II
A. फ्राँसिस डे	1. मद्रास का संस्थापक
B. जॉब चॉरनाक	2. कलकत्ता का संस्थापक
C. जैरॉल्ड आन्गियार	3. बंबई का संस्थापक

   कूट:

	A	B	C
(a)	1	2	3
(b)	1	3	2
(c)	2	1	3
(d)	2	3	1

11. 1746-48 के मध्य प्रथम कर्नाटक युद्ध किन दो यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के मध्य हुआ था?
   (a) डच एवं अंग्रेज़
   (b) अंग्रेज़ एवं फ्राँसीसी
   (c) अंग्रेज़ एवं पुर्तगाली
   (d) पुर्तगाली एवं डच
12. अंग्रेज़ों ने निम्नलिखित में से किसके नेतृत्व में वांडिवाश के युद्ध में फ्राँसीसियों को हराया था?
   (a) काउंट दी लाली
   (b) गोडेहू
   (c) आयर कूट
   (d) ला बूर्दने
13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:
   1. 1498 ई. में वास्कोडिगामा भारत के पश्चिमी तट पर कालीकट पहुँचा था।
   2. भारत में सर्वप्रथम पुर्तगाली यूरोपीय कंपनी का आगमन हुआ था।
   3. भारत में प्रथम डच फैक्ट्री की स्थापना मसुलीपट्टनम में हुई थी।
   4. ईसाई पादरी मॉन्सरेट तथा फादर एक्वाविबा का भारत आगमन मुगल शासक अकबर के दरबार में हुआ था।

   उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
   (a) केवल 1, 2 और 3
   (b) केवल 2, 3 और 4
   (c) केवल 1 और 4
   (d) 1, 2, 3 और 4
14. द्वितीय कर्नाटक युद्ध का कारण निम्नलिखित में से क्या था?
   (a) फ्राँसीसी तथा ब्रिटिश कंपनियों द्वारा क्रमश: हैदराबाद और कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों को समर्थन देना।
   (b) ऑस्ट्रिया और प्रशा के बीच सप्तवर्षीय युद्ध।
   (c) ऑस्ट्रिया में उत्तराधिकार का युद्ध।
   (d) इनमें से कोई नहीं।
15. प्रथम कर्नाटक युद्ध के बाद हुए 'आक्सा ला-शैपेल' की संधि के बाद निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र अंग्रेजों को वापस कर दिया गया?
   (a) पांडिचेरी (b) मद्रास
   (c) बंबई (d) कलकत्ता

16. फ्राँसीसी सरकार ने निम्नलिखित में से किस कारण डूप्ले को वापस बुला लिया था?
    (a) डूप्ले की भ्रष्ट नीति के कारण
    (b) द्वितीय कर्नाटक युद्ध में डूप्ले की हार के कारण
    (c) डूप्ले द्वारा चंद्रनगर पर कब्जा न कर पाने के कारण
    (d) मुगल शासन के साथ समन्वय न कर पाने के कारण

17. अंग्रेज़ों को निम्नलिखित में से किस मुगल शासक के शासनकाल में सूरत, मसुलीपट्टनम तथा विशाखापट्टनम के कारखानों से अपने अधिकार खोने पड़े थे?
    (a) शाहजहाँ
    (b) जहाँगीर
    (c) औरंगजेब
    (d) अकबर द्वितीय

18. तृतीय कर्नाटक युद्ध का तात्कालिक कारण था:
    (a) ऑस्ट्रिया और प्रशा में शुरू हुआ सप्तवर्षीय युद्ध।
    (b) फ्राँस की सरकार द्वारा काउंट डि लाली को भारत के संपूर्ण फ्राँसीसी क्षेत्र के सैन्य-असैन्य अधिकार देना।
    (c) गोडेहू द्वारा पांडिचेरी की संधि कर लेना।
    (d) अंग्रेज़ों द्वारा चंद्रनगर के अतिरिक्त अन्य सभी फ्राँसीसी प्रदेश फ्राँस को वापस कर देना।

19. निम्नलिखित में से कौन भारत में पुर्तगालियों की उपलब्धि थीं?
    1. तंबाकू की खेती
    2. प्रिंटिंग प्रेस की शुरुआत
    3. कार्टेल पर आधारित व्यापारिक व्यवस्था

    कूट:
    (a) केवल 1 और 2
    (b) केवल 2 और 3
    (c) केवल 1 और 3
    (d) 1, 2 और 3

20. फ्राँसीसी व्यापारिक कंपनी की स्थापना किस फ्राँसीसी शासक के शासनकाल में हुई थी?
    (a) लुई 14वाँ
    (b) लुई 16वाँ
    (c) नेपोलियन द्वितीय
    (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला

1. (c)	2. (a)	3. (b)	4. (c)	5. (b)	6. (c)	7. (c)	8. (b)	9. (d)
10. (a)	11. (b)	12. (c)	13. (d)	14. (a)	15. (b)	16. (b)	17. (c)	18. (b)
19. (a)	20. (a)							